छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास

संपादक
प्रो आर के लहरे

सह–संपादक
प्रो. टी. एस. पैंकरा

GEEL INFIX PUBLISHING SERVICES

Publishing-in-support-of

GEEL INFIX
PUBLISHING SERVICES

Kotra Road, Rajeev Nagar, Opposite Rambagh
Raigarh, Chhattisgarh - 496001

www.geelinfix.in

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 9788194591702

Price: ₹ 250.00

The opinions/contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/standings/ thoughts of Geel Infix Publishing Services.

Printed in India

Chhattisgarhi Bhasha & Sahitya Me Yugin Chetna Ka Vikas

इलेक्ट्रोनिक संपादक
संगीता पाटीदार

GEEL INFIX PUBLISHING SERVICES
www.geelinfix.in

विषय–सूची

क्र.		पृ. क्र.
1.	'छत्तीसगढ़ी कहानियों में अभिव्यक्त लोक चेतना' –डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल'	11
2.	छत्तीसगढ़ी में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य व नाट्यकला –डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन	18
3.	छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में लोकगीत – जानकी चौधरी	22
4.	छत्तीसगढ़िया करमा – डॉ. श्रीमती रश्मि कोका	
5.	छत्तीसगढ़ी के विविध बोलियाँ –श्रीमती इमिलियाना लकड़ा	32
6.	छत्तीसगढ़ लोक नाट्य परम्परा –डॉ. महेश कुमार शुक्ल –अतुल कुमार मिश्र –विपिन कुमार तिर्की	35
7.	छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और लोक जीवन प्रो.चरणदास बर्मन	36
8.	लाला जगदलपुरी की छत्तीसगढ़ी कविताओं में जीवन सौन्दर्य – डॉ. राजेश कुमार सेठिया	48
9.	लोक साहित्य : महत्व और बाजारीकरण –डॉ. एच. आर आगर * –लक्षेश्वरी **	50
10.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य व नाट्य–कला – श्रीमती मार्ग्रेट कुजूर	51
11.	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति वर्तमान परिवेश –प्रो. बी के भगत	59

12.	छत्तीसगढ़ी बोली व साहित्य के विविध आयाम –डॉ. मंजुला पाण्डेय	65
13.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोकगीत संगीत, नृत्य व नाट्यकला – संगीता रंगारी	69
14.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गीत, संगीत, नृत्य व नाट्य कला –राजेन्द्र प्रसाद नागवंशी	74
15.	छत्तीसगढ़ की राम मय भूमि –डॉ. सरिता पाण्डेय	76
16.	छत्तीसगढ़ के विविध बोलियाँ डॉ. बी.आर. महिपालस डॉ. सुनीता राठौर सहा.	79
17.	छ.ग. साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति श्रीमति पुष्पांजली दासे	82
18.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –डॉ. सुनीता राठौर	90
19.	छत्तीसगढ़ की लोक नाट्य परंपरा *डॉ. महेश कुमार शुक्ल, **अतुल कुमार मिश्र, *** विपिन तिर्की	93
20.	छत्तीसगढ़ी साहित्य में अभिव्यक्त लोकसंस्कृति डॉ. पी.डी. महंत* बेला महंत**	94
21.	छत्तीसगढ़ी लोकगीतः एक परिचय –राकेश कुमार कौशल	96
22.	छ.ग. में प्रचलित त्यौहार व मेला का स्वरूप –डॉ0 रमेश टण्डन	102
23.	छत्तीसगढ़ी और आंग्ल भाषा का तुलनात्मक अनुशीलन प्रो. राज कुमार लहरे* प्रो. हेमकुमारी पटेल**	107
24.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –धर्मेन्द्र कुमार पाटनवार	113

छ.ग. में प्रचलित त्यौहार व मेला का स्वरूप

—डॉ0 रमेश टण्डन

छत्तीसगढ़ धार्मिक प्रदेश है जहाँ त्यौहारों का विशेष महत्व है। इन त्यौहारों के लिए तिथि अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार तय न होकर हिन्दी पांचांग के अनुसार तय होती है। सम्पूर्ण वर्ष, चैत्र मास से प्रारम्भ होकर फाल्गुन तक चलता है। चैत्र मास में मनाए जाने के कारण वर्ष के प्रथम दिन की शुरूआत रंगों के त्यौहार होली (धुरेड़ी) के साथ होती है। इस त्यौहार को वर्ष का अंतिम त्यौहार भी मानते हैं, क्योंकि अंतिम मास फाल्गुन की अंतिम रात को होलिका दहन करने के बाद की प्रथम सुबह होली के रंगों के साथ होती है। इस दौरान कई त्यौहारों के आगमन से छत्तीसगढ़ का मानव मन हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्लित व रोमांचित होते रहता है। इसमें से अंधविश्वास के प्रतीक कुछ त्यौहारों को छोड़ दें तो शेष समस्त मेला व त्यौहार बुराई से अच्छाई की जीत, लोक संस्कृति के वाहक, जनमानस के मध्य आपसी प्रेम आदि का सूचक अवश्य है।

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, प्रथमा से चैत नवरात्रि का प्रारम्भ होती है, जो नौ दिन तक चलती है। वैशाख मास में शुक्ल पक्ष, तृतीया को अक्ती आती है। प्रथम त्यौहार के रूप में किसानों के त्यौहार हरियाली को माना जाता है जो श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में अमावस के दिन निर्धारित है। इसमें किसान हल सहित अपने समस्त औजारों जैसे फावड़ा, गैंती, टंगिया, सब्बल, कुदाली आदि की पूजा करता है। इसी मास में शुक्ल पक्ष के पंचमी को नाग पंचमी का उत्सव मनाया जाता है। फिर पूर्णिमा को भाई–बहन का पवित्र त्यौहार रक्षा बंधन पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष, अष्टमी को श्रीकृष्ण की पूजा (जन्माष्टमी) और शुक्ल पक्ष में चतुर्थी को श्री गणेश की पूजा (गणेश चतुर्थी) की जाती है। आश्विन (क्वांर) मास के कृष्ण पक्ष में पीतरों के लिए श्राद्ध किया जाता है। प्रथमा से प्रारम्भ करके, बाल पीतर के लिए सप्तमी को, महिला पीतर के लिए नवमी को, पुरूष पीतर के लिए दसमी को श्राद्ध करते हुए अंतिम विदाई तेरस को की जाती है। इसी मास में शुक्ल पक्ष की प्रथमा से नवरात्र का प्रारम्भ होता है जो नौ दिन चलता है। दसवें दिन (दसमी को), दशहरा का

पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। फिर पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा (रात्रि में अमृत के बूंदों का टपकना) का मेला प्रसिद्ध है।

कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष, चतुर्थी को महिलाओं का प्रसिद्ध व्रत करवा चौथ आता है। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से लेकर शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक पाँच दिन का भव्य दीपों व पटाखों का त्यौहार आता है, जिसे धन तेरस, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा व भाई दूज के रूप में प्रसिद्धि मिली है। शुक्ल पक्ष आने पर एकादशी को एक महत्वपूर्ण त्यौहार का उत्सव होता है जिसमें गन्ने की पूजा की जाती है। पौष मास में शुक्ल पक्ष एकादशी से तीन दिन के लिए सतनामियों का प्रसिद्ध मेला भजन मेला लगता है। फिर जैसे ही पूर्णिमा आती है, किसानों का दिल छेरछेरा करते उमंग से भर जाता है। माघ मास के आने पर शुक्ल पक्ष की पंचमी को सरस्वती की पूजा (बसंत पंचमी), फाल्गुन मास के आने पर कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी अथवा चौदस को शंकर की पूजा (महाशिवरात्रि) की जाती है। इसी दौरान माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक पन्द्रह दिवस का राजिम में कुम्भ मेला लगता है। अंतिम मास फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की पंचमी से सप्तमी तक सतनामियों के लिए संत गुरु बाबा घासीदास की जन्मस्थली गिरौदपुरी में भव्य मेला लगता है। गिरौदपुरी धाम में कुतुबमीनार से भी ऊँचा जैत खाम, पंचकुण्डी, मुख्य मंदिर, अमृत कुण्ड, चरण कुण्ड, जोंक नदी आदि दर्शनीय स्थल है। इसके अतिरिक्त प्रगतिशील सतनामी समाज के द्वारा मड़वा सरहद में सामाजिक धर्मशाला सामाजिक हित में निर्मित है।

कुछ पर्व/त्यौहार जिनका महत्त्व बढ़ा है–

- गणेश पूजन उत्सव
- नवरात्रि एवं दशहरा मेला
- दीपावली एवं काली पूजन उत्सव
- नव वर्ष
- रंगों का त्यौहार– होली

कुछ पर्व/त्यौहार जिनका महत्त्व घटा है–

- नांगर तिहार (हरियाली)
- पोरा तिहार (पोला)

- कुशियार तिहार (देव उठनी एकादशी– तुलसी विवाह)
- छेरछेरा

कुछ त्यौहारों की विशिष्टताएँ–

नांगर तिहार (हरियाली / हरेली)

- किसानों का त्यौहार।
- हल, फावड़ा, गैंती, कुदाली, टांगी आदि लोहे के औजारों की पूजा।
- भिगोए हुए चावल पिसान से हाथा लगाकर पूजा करना।
- प्रमुख व्यंजन– गुड़ और चावल–आटा से बनी चीला रोटी।
- गेड़ी चढ़ने का प्रचलन।
- नारियल फेंकने जैसी शर्त लगाने की परम्परा।
- श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या को मनाया जाता है।
- गेड़ी आदि का प्रचलन बंद हो रहा है।

पोरा तिहार

- इस त्यौहार में मिट्टी का बैल बनाया जाता है। इसे सजाकर पूजा की जाती है।

भोजली तिहार

- गणेश चतुर्थी के समय यह त्यौहार आता है।
- गणेश चतुर्थी के 2–3 दिन पहले किसी पात्र जैसे थाली, गंज, बांस से बुने हुए चरिहा, दौरी, टुकनी आदि में गेहूँ को रोपा जाता है।
- गणेश विसर्जन के दिन भोजली को भी विसर्जित की जाती है।
- महिलाएँ / लड़कियाँ, भोजली (गेहूँ के पत्तों) को एक–दूसरे के कान में खोंचकर एक–दूसरे की भोजली (सखी) बन जाती हैं।

दीपावली

- इस त्यौहार में विद्युत चालित दिए (बल्ब) और प्रदुषण कारक पटाखे का प्रचलन बढ़ा है।
- पारम्परिक दिए – भाप से पकाए गए चावल पिसान के दिए की परम्परा खतम हो गई।
- चावल पिसान का व्यंजन (मूंगफली, तिल, मुर्रा व गुड़ से बने गुझा / गुझिया / फारा मुठिया) अब लुप्त होने की स्थिति में है।

देव उठनी एकादशी व्रत (कुषियार पूजा)

- कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को यह त्यौहार मनाया जाता है।
- इसमें गन्ने की पूजा होती है।
- चावल पिसान के विलयन से विभिन्न प्रकार की रंगोली जैसी आकृ –ति बनायी जाती है। लक्ष्मी पाँव भी बनाया जाता है।
- घर में पाले हुए गाय, बैल आदि पशुओं को पके हुए दाल–चावल खिलाते हैं, जिसके जूठन को मनुष्य भी ग्रहण करता है।
- प्रमुख नृत्य– राउत नाचा। इसमें कमी नजर आती है।

छेरछेरा

- पौष मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा को किसानों का त्यौहार छेरछेरा आता है।
- प्रमुख व्यंजन– हिरवा, गुड़ और चावल पिसान से बने पुरी रोटी।
- खास कर जो इस दिन बच्चे छेरछेरा के रूप में प्रत्येक घर धान मांगने जाते हैं।
- किसान धान मिसाई का काम खतम कर चुका होता है और खुशी–खुशी दान के रूप में धान बांटता है।
- प्रमख नारा– 'छेरछेरा, कोठी के धान ल हेरहेरा।'

होली

- इस त्यौहार में रंगों का चलन बढ़ा है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तो है ही, साथ में यह त्यौहार पानी का भी संकट लेकर आता है।
- पारम्परिक डण्डा नाच और सुवा नाच में कमी आई है जो चिंताजनक है।

निष्कर्ष

- छत्तीसगढ़ की अपनी मूल संस्कृति जो त्यौहारों में बसती है, विलुप्त होने के कागार पर है।
- विभिन्न पारम्परिक व त्यौहारी नृत्य अब स्टूडियो तक ही सीमित रह गए हैं।
- छत्तीसगढ़ी त्यौहारी व्यंजन सिर्फ गाँवों तक सिमट गया है।
- विभिन्न त्यौहार, अंधविश्वास का प्रतीक हो गया है, जिसे अब लोग नकारने लगे हैं।

सुझाव

- सरकार / समाज सेवी संगठनों को आगे आकर पारम्परिक वेश–भूषा, व्यंजन, नृत्य, गीत आदि के बढ़ावा के लिए पुरस्कार योजना लागू करना चाहिए।
- स्कूली पाठ्यक्रमों में इन्हें लागू किया जाना चाहिए जिससे नयी पीढ़ी छ.ग. की त्यौहारी संस्कृति को न भूले।
- प्रत्येक गाँव, कस्बे व शहर में 'महिला स्व –सहायता समूह' की तर्ज पर 'डण्डा नाच समूह', 'सुवा सहेली', 'गेड़ी संगवारी', आदि का निर्माण होना चाहिए, इसे शासन स्तर पर सहयोग भी मिलना चाहिए।

डन (सहा. प्रा.–हिन्दी) एम. जी. शासकीय महा. वि. खरसिया